संगीत और लघुगीत

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

छोटे, अल्प, अल्पगीत की मान्यता गांधर्वशास्त्र के व्यवहार में रही है। ध्रुव और मण्ठादि के यत्किंचित् लक्षणों के होने से क्षुद्र गीतों का गायन में वैशिष्ट्य रहा है। परिभाषा के रूप में यह माना गया है कि तालयुक्त वाक्य मात्र क्षुद्रगीत कहे जाते हैं, जैसा कि रागरत्नाकरकार ने कहा है- तालि धातुयुक्त वाक्यमात्रक्षुद्रगीत। इथे ध्रुव मण्ठादिक लक्षण किञ्चित॥ इसका आशय है कि बहुत पुराने काल से गीत के इस रूप को पहचाना गया है और इसकी चर्चा शास्त्रों में की गई है। नरहरि चक्रवर्ती सम्पादित वैष्णवसंगीतशास्त्र में रागरत्नाकर उद्धृत है और उसमें इस संबंध में उचित विमर्श हुआ है। वहां जो उदाहरण दिए गए हैं, वे संकीर्तन के पदों के हैं, ऐसे में पदों के गायन स्वरूप को क्षुद्रगीत के रूप में जानना चाहिए।

इस सन्दर्भ में यह भी कहा गया है कि ताल-धातु से समन्वित जो वाक्यमात्र हो, वह क्षुद्र कहा जाता है। प्राय: इसमें गायन के अंग के रूप में ध्रुव और मण्ठादि के लक्षण पाए जाते हैं। ध्रुव से आशय है कि जिसमें उद्ग्राह समान मात्रा का वर्णित हो। शास्त्र में आया है कि उद्ग्राह प्रथम खण्ड में है, इसमें दो-तीन मात्रा अधिक या समान होती है। ध्रुवग्राह उद्ग्राह से उगा गान होता है, जिसमें उद्ग्राह और आभोग सममात्रा में हो, वह मण्ठ है और ध्रुव में उद्ग्राह से द्विगुण या डेढ़ी मात्रा कही जाती है।

अन्त्यानुप्रास का निवेश

क्षुद्रगीत में निश्चित ही अन्त में अनुप्रास की छटा होती है। ऐसे में यह छंद शास्त्र की विशेषता से मण्डित होता है। शास्त्रकार ने इसके लक्षण बताए हैं- तालधातुयुतं वाक्यमात्रं क्षुद्रमितीर्यते। बाहुल्येनेष्यते ह्यत्र ध्रुवमण्ठादिलक्षणम्॥ क्षुद्रगीते अन्त्य अनुप्रास सुनिश्चिय। देखह शास्त्रज्ञगण विवरिया कय॥ क्षुद्रगीत में अनुप्रास की अनिवार्यता के प्रसंग में यह भी कहा गया है- पञ्झटिकायां विरुदावल्यां च क्षुद्रगीतादौ। अन्त्यानुप्रासोयं निवेशनीयो विशेषज्ञै:॥ इसका आशय है कि पञ्झटिका में, विरुदावली में और क्षुद्रगीतादि के अन्तर्गत विशेषज्ञों को अन्त्यानुप्रास का निवेश करना चाहिए।

अन्त्यानुप्रास के लक्षण इस प्रकार बताए गए हैं कि पूर्वस्वर के सहित यथावस्थित व्यंजन की आवृत्ति के अन्त में प्रयुक्त हो तो वह अन्त्यानुप्रास कहा जाता है, जैसा कि संगीतदर्पण में आया है- व्यंजनं चेद् यथावस्थं पूर्वस्वर